International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 17-08-2022, Accepted: 03-09-2022, Published: 19-09-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 10-12

भाषा की आधुनिकता एवं सहजता

पवन सिंह रावत
School of Liberal Arts, Uttaranchal University, Dehradun, Uttarakhand, India

सारांश
भाषा मनुष्य के लिये एक सेतु का कार्य करता है, जो उसे एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचा देता है। तथा इसके माध्यम से वह अपने विचारो को बडी आसानी से सम्पादित करता है। भाषा का ज्ञान होना एक सतत प्रक्रिया है, जिसके पास यह ज्ञान उचित है मात्रा मे होता वह इस सतत प्रक्रिया से अपने विचारों, भावो को आसानी से अभिव्यक्त कर सकता है। उचित भाषा का वक्तव्य हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। अतरू अपनी बातों को बताने के लिये हमे सदैव एक सार्थक माध्यम की आवश्यकता होती है. और वह माध्यम हिन्दी भाषा है। जिसके द्वारा हम अपनी विचारो को इसरों के समक्ष आसानी से रेख सकते है। और वे विचार दूसरों को आकर्षित भी करते है।

मूल शब्दः अभिव्यक्त, अखण्डता, सहजता, अभिलाषा, सम्प्रेषण

प्रस्तावना

भाषा अपने मन के विचारों, भावों को अभिव्यक्त करने का एक सुसज्जित माध्यम है। जिसके माध्यम से हम अपने विचारों को आसानी से प्रकट कर सकते हैं। भाषा के अभाव में ना तो हम एक संगठित समाज की कल्पना कर सकते हैं और ना ही एक राष्ट्रीय समुचित विकास की, क्योंकि बिना भाषा के वे विचार जो राष्ट्र की एकता, अखण्डता में उचित क्रान्ति ला सकते हैं बिना भाषा के वे विचार पिंजरे में कैद पक्षी की तरह है जिनमें उड़ने की लालसा है। परन्तु उन्हें माध्यम नहीं मिल पा रहा है। राष्ट्रीय प्रगति के किसी क्षेत्र को भी देखे तो उसकी आधार शिला भाषा रूपी पत्थर ने ही रखी है।

राष्ट्र भाषा का अर्थ है राष्ट्र की भाषा अर्थात् जनता की भाषा जो उस देश में सबसे ज्यादा बोली और समझी जाती हैं। उन सब में राष्ट्रीय एकता को दृढ़ बनाने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है।

मुझमें अगर जीने का हुनर है तो उससे कुछ खास करवाऊँ
मैं कोई सैलाब नहीं लेकिन प्यास बुझा सकता हूँ
मैं कोई खुशबू नहीं जो तुम्हें महक उठाऊँ
मैं एक दरिया हूँ तुम्हें रास्ता दिखा सकता हूँ
किस्मत कोई लिख कर नहीं आता आसमां से।
जमीन पर ही मेहनत से मकाम पा सकता हूँ
मैं खामोश हूँ तो मेरी खामोशी को समझो
इसी खामोशी से पर्वत उठा सकता हूँ।
मैं लिखना चाहता हूँ किस्मत इस कलम से
तो इस कलम को अच्छा सफर करवाऊँ
मंजिल पर निकलने से ही
मंजिल पाने का रास्ता दिखा सकता हूँ
मुझे शौक आया है दरख्तों से बात करने में
कोशिश जारी है ये भी करवा सकता हूँ
जो तुम मुझे नहीं पढ़ पा रहे हो मेरी गलती नहीं
नजर सीधी रखो पढ़ा भी जा सकता हूँ
मेरे साथ मेरा लिखा है
मैं दिवारों से भी बुलवा सकता हूँ
मैं खामोश हूँ तो मेरी खामोशी को समझो
इसी खामोशी से पर्वत .....उठा सकता हूँ।

उक्त पंक्तियां भाषा (हिन्दी) की ओर इशारा करती है कि मुझमे जीने का हुनर बहुत है और मैं इससे बहुत कुछ कर सकता हूँ। भले तुम मुझे पानी का तालाब न समझो पर मेरे ज्ञान से तुम अपनी प्यास बुझा सकते हो।

भाषा कहती है वैसे तो मैं कोई खुशबू नहीं हूँ जिसके सेवन से तुम महक उठो परन्तु मैं एक दरिया (रास्ता) हूँ जो तुम्हें तुम्हारे गन्तव्य तक ले जा सकती हूँ।

भाषा कहती है मेरे अध्ययन से आप शिखर की छू सकते हैं परन्तु मेहनत से और अगर कभी मैं खामोश हूँ तो उस खामोशी को समझो इसी से तो मैं कुछ अच्छा कर सकती हूँ

उक्त पंक्तियों में भाषा के महत्व तथा सहजता को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है।

हम जानते हैं मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे समाज में रहकर अपने सभी कार्यों का निर्वहन करना होता है। मनुष्य के मानसिक व बौद्धिक विकास के लिए राष्ट्र भाषा की आवश्यकता होती है। मनुष्य चाहे कितनी भी भाषाओं का ज्ञाता हो, वह चाहे देश विदेश के किसी भी क्षेत्र में कार्य करता है। परन्तु अपनी आन्तरिक इच्छाओं, भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने की सहजता उसे अपनी राष्ट्र भाषा में ही आता है। राष्ट्र भाषा बोलने से उसे मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होती है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निजभाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल

प्रस्तुत पंक्तियों में भारतेन्दु हरिशचन्द्र जी कहते हैं। जब तक हम अपनी भाषा में उन्नति का विचार समाहित नहीं कर लेते तब क हमारा स्वयं का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता है। बिना अपनी भाषा के ज्ञान को समझे हम अपने मन की अभिलाषाओं को पूरा नहीं कर सकते हें। इन अभिलाषाओं को पूरा करने के लिए हमें अपनी मातृभाषा का सहारा लेना पड़ेगा क्योंकि बिना भाषा ज्ञान के उन्नति नहीं अवनति का मार्ग मिलता है।

विशेष शब्द– अभिव्यक्त, अखण्डता, सहजता, अभिलाषा, सम्प्रेषण।

राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी

हिन्दी भाषा का उद्भव एवं विकास बहुत पुराना है। भारत प्राचीनतम काल से ही एक ऐसा देश रहा है जहां पर बहुत सी विचारधाराओं के लोग रहते हैं जिसमें विभिन्न राज्य सम्मिलित

रहे हैं। सबमें अपने देश के प्रति प्रेम, आदर, त्याग, समर्पण की भावना रही है। किंतु सभी राज्यों की सामूहिक भावना की अभिव्यक्ति का माध्यम संस्कृत भाषा रहा है।

हिन्दी शब्द की उत्पत्ति सिंधु शब्द से हुई है। सिंधु का तात्पर्य सिंधु नदी से है। जब ईरानी मूल के लोग उत्तर पश्चिम से अति हुए भारत आये तब उन्होंने सिन्धु नदी के आसपास रहने वाले भारतीय लोगों से बातचीत की। उनका उच्चारण स का ह तथा घ का न का था। फलस्वरूप उन्होंने सिन्धु नदी के आसपास के भारतीयों को हिन्दु कहाँ।

ईरानी भाषा में स को ह तथा घा को द उच्चारित किया जाता था।

हिन्दी शब्द फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ हिंद देश के निवासी होता है।

भारोपीय	
केन्तुम	शतम्
	↓
	संस्कृत ↓ वैदिक संस्कृत वैदिक संस्कृत (1500–1000) ईसा.पू. ↓ लौकिक संस्कृत (1000–500) ईसा.पू. ↓ पार्ली (500–1) ईसा.पू. ↓ प्राकृत (1–500) ईसा.पू. ↓ अपभ्रंश (500–1000) ईसा.पू. ↓ हिन्दी (1000 से अब तक)

हिन्दी भारोपीय भाषा परिवार के अन्तर्गत आने वाली भाषाओं में से एक है। भारोपीय भाषा को केन्तुम और शतम् जिसमें हिन्दी भाषा शतम् के अन्तर्गत आता है।

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल में वैदिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत का प्रचलन था। इसलिये संस्कृत काल को दो काल खण्डों में विभक्त किया गया है।

वैदिक संस्कृत काल में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अर्थववेद और लौकिक संस्कृत काल में रामायण, महाभारत की रचना हुई।

पाली काल खण्ड के अन्तर्गत बौद्धधर्म ने त्रिपिटक का प्रचार प्रसार किया व प्राकृत भारत की प्रथम देशी भाषा, जिसका हर व्यक्ति, हर वर्ग ने इस्तेमाल किया। भगवान बुद्ध के सारे उपदेश पालि भाषा में ही उपलब्ध है।

अपभ्रंश भाषा का बिगड़ा हुआ रूप कहलाता है। इसमें शौरसेनी, अधोमागधी, मागधी खस, बाचड, महाराष्ट्रीय, पेशाची, अपभ्रंश से राजस्थानी, गुजराती, हिंदी, पहाड़ी इत्यादि भाषाओं का जन्म हुआ।

हिन्दी भाषा का उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से हुई है।

सन् 1947 में जब भारत गुलामी की जंजीरों को तोड़कर आजाद हुआ तो आजाद भारत को एक ऐसी भाषा की आवश्यकता पड़ी जो निम्न रूपों में सही हो।

1. उस भाषा को स्वतंत्र देश के नागरिकों द्वारा सहजता से बोला जा सके तथा सुगमता से पढ़ा जा सके।
2. वह भाषा सभी क्षेत्रों में उपयोगी तथा अनुकरणीय, श्रेष्ठ हो।
3. जो भाषा संस्कृत भाषा के करीब हो।
4. जो भाषा सतत पोषणीय विकास कर सके।
5. जिसे अभिव्यक्त करने में सुकुन मिलता हो।

इन सभी गुणों की पूर्ति हिन्दी भाषा कर सकती है। क्योंकि इसकी शब्दावली बहुत आसान है तथा आसानी से सीखी जा सकती है।

संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 के खण्ड 1 के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी संघ की राजभाषा हैं

संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए उपयुक्त होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा।

भारतीय संविधान द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया है परन्तु फिर भी उसका राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयोग नहीं किया जा रहा है। भारत के अधिकांश राज्यों में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है। परन्तु आज भी हिन्दी भाषा को जो गौरवपूर्ण स्थान मिलना चाहिये था वह नहीं मिल पाया है।

हिन्दी भाषा का प्रचलन

सन् 1800 में जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारत आई जो व्यापार करने के उद्देश्य से आई थी परन्तु बाद में उन्होंने भारत को गुलाम कर दिया।

1816 ई0 में विलियम कैरी ने एक वक्तव्य दिया कि हिन्दी सिर्फ एक राज्य, क्षेत्र विशेष की भाषा नहीं अपितु यह सभी जगहों में बोली जाने वाली भाषा है।

तत्पश्चात् गियर्सन ने हिन्दी भाषा को चर्चा परिचर्चा में बोलचाल भाषा का रूप देकर इसकी श्रेष्ठता को बढ़ाया।

इन विद्वान व्यक्तियों के विचारों से यह स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा के इस प्रचार–प्रसार से यह भाषा इनके विचारों में आ रही है।

सन् 1875 में केशव चन्द्र सेन ने एक लेख लिखा था। भारतीय एकता कैसी होनी चाहिए। फिर स्वयं उसका उत्तर दिया। सारे भारत वर्ष में एक ही भाषा का व्यवहार तथा हिन्दी का प्रचलन 1937 में देश के कुछ राज्यों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का मंत्रिमण्डल गठित हुआ। इन राज्यों में हिन्दी की पढ़ाई को प्रोत्साहित करने का संकल्प लिया परन्तु कोई ठोस कदम नहीं उठाया।

चौथे दशक तक हिन्दी राष्ट्र.भाषा के रूप में आम सहमति प्राप्त कर चुकी थी।

1940 में करांचली अधिवेशन में सरदार बल्लभभाई पटेल ने पहले अपना भाषण हिन्दी में पढ़ा फिर अंग्रेजी में।

सन् 1942 से 1945 तक जब हमारा देश स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत था तक आजादी के लिए कोई लेख हिन्दी में प्रकाशित हुए। हिन्दी की प्रबलता से भी अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा।

हिन्दी भाषा का इतिहास बहुत पुराना है। ये संघर्षों की क्रान्ति से उत्पन्न हुई भाषा है। तभी तो इतनी मीठी है।

आज हिन्दी भाषा की व्यापकता सम्पूर्ण देश में है। आज हिन्दी भाषा अपनी कविताओं, कहानियों से विश्व प्रसिद्ध भाषा बन चुकी है।

उपसंहार

राष्ट्रभाषा हिन्दी का वर्तमान, भविष्यत काल उज्जवल है। अगर हिन्दी भाषा के प्रति हमारा संकल्प सही दिशा में रहा तो हिन्दी भाषा विश्व के सभी हिस्सों में बोली जाने वाली लोकप्रिय भाषा बन सकती है। यह हमारा राष्ट्रीय गर्व बन सकती है। यह हमारा राष्ट्रीय गर्व बन सकती है। जिस पर हमें अभिमान होगा कि हम भारतवर्ष के लोग हिन्दी भाषा है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का एक कथन है कि भले ही हम राष्ट्र भाषा हिन्दी को बढ़ावा दे रहे है। परन्तु इसका कदापि यह

मतलब नहीं है कि हम प्रान्तीय भाषाओं को नुकसान पहुंचा रहे है। अपितु हमारा मतलब यह है कि हम प्रान्त व राष्ट्र के मध्य कैसे पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करे व इस सम्बन्ध की दृढ़ता के लिय हिन्दी भाषा का प्रयोग करे।

हिन्दी भाषा देश के व्यक्ति होने के नाते यह हमारा परम कर्तव्य है कि हम हिन्दी भाषा को देश व्यापी भाषा बनाये तथा इसके विस्तार, उत्थान, प्रगति के लिये हर सम्भव प्रयास करे तथा इसका सम्मान करें।

भारत जैसे विशाल देश के लिये जहां पर अनेक जाति, धर्म, रंग, रूप, परम्परा को मानने वाले लोग निवास करते हैं। जहां पर अनेक भाषाओं, उपभाषाओं, क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग किया जाता हो, वहां पर हिन्दी का प्रयोग राष्ट्र भाषा के रूप में अवश्य हो सकता है।

हम जानते हैं भारत वसुधैव कुटुम्बकम को मानने वाला देश है। जहां पर उसे समाजवादी, पंथनिरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक गणराज्य की अवधारणा मिली है। जो अनेकता में एकता की मिसाल पेश करता है। जो सर्वधर्म सम्भाव की दृष्टि रखता हो। भारतीय संस्कृति की यह विशेषता है कि वह विभिन्न प्रकार के समुदाय के लोगों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकता है। और इस सामंजस्य को स्थापित करने के लिए सम्प्रेषण की आवश्यकता होती है जिससे कि हम एक वातानुकुलित सम्बन्ध स्थापित है और वह सिर्फ हिन्दी भाषा कर सकती है। हिन्दी भाषा वह जादू है जिसके बोलने व सुनने मात्र से है मन में एक उमंग का संचार होने लगता है और सुन कर दिल को एक सुकून मिलता है।

आज हम किसी भी विषय की बात करे चाहे वह विषय अभियांत्रिकी से हो चाहे वह भेषाजज्ञ विज्ञान से हो आज हिन्दी भाषा का उपयोग सभी क्षेत्रों में है। भारतीय जन मानस भी आज हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने की कोशिश कर रहा है जिससे हिन्दी भाषा रूपी विकास की अवधारणा सत्य साबित हो रही है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी सौरभ कक्षा 11 एमबीडी
2. चित्रा हिन्दी सौरभ कक्षा 10
3. Hindi Saraug.com हिन्दी भाषा का विकास
4. Hindi Os.in
5. राष्ट्रभाषा का इतिहास, सं. गंगाशरण सिंह
6. राष्ट्रभाषा आन्दोलन।
7. jay Singh L. Hindi Dalit Sahitya me Vidroh Peeda Tatha Jeevan Mulayo Ki Bhauayami Drashti. *Thesis*, 2014. http://hdl.handle.net/10603/40469
8. Matrubhoomi. (2020). Prabha Sakshi. https://www.prabhasakshi.com/matrubhoomi-series
9. भगवान सिंह निरंजन. हिंदी भाषा की प्रकृति की उपेक्षा. *Shodh Shree*,2020:*36*(3):125-131. http://shodhshree.com/images/ssjul2020.pdf?cv=1